कारें हमेशा से ही सिर्फ सफर का जरिया नहीं रही हैं, बल्कि समाज में स्टेटस सिंबल और पर्सनैलिटी का आईना भी रही हैं, लेकिन जब कार को सिर्फ ड्राइव करने भर का साधन न मानकर उसे अपनी जरूरत और लाइफस्टाइल के हिसाब से ढालने की चाहत जगी, तभी कस्टमाइजेशन की दुनिया का जन्म हुआ। कार निर्माताओं या शोरूम के साथ शुरू हुआ यह सिलसिला जहां सामान्य ग्राहक के लिए एसेसरीज के नाम पर एक बड़ा बाजार बन चुका है, वहीं अमीरों और सेलिब्रेटीज के लिए उनके शौक और शख्सियत की पहचान का हिस्सा है। आज कारों का कस्टमाइजेशन चाहत और पसंद से आगे बढ़कर पर्सनल ब्रांडिंग का प्रतीक जैसा बन चुका है। ऐसे में कस्टमाइजेशन के इस दौर में यह कहना गलत नहीं होगा कि 'कार वही, पर पहचान सिर्फ आपकी।' जाहिर है, जो कार कल तक सिर्फ सफर का साधन थी, आज वह आपकी पहचान और पर्सनैलिटी का हिस्सा है। कस्टमाइजेशन अब लग्जरी नहीं, बल्कि पर्सनल ब्रांडिंग है। इलेक्ट्रिक कारों और सस्टेनेबल मटेरियल के साथ इसका अब नया दौर शुरू हो चुका है। एआई बेस्ड इंफोटेनमेंट और स्मार्ट सेफ्टी फीचर्स जल्दी ही कार को पर्सनल स्पेस तथा टेक्नोलॉजी का कॉम्बो बना देंगे। *-मनोज त्रिपाठी, कानपुर*

जब कार बन जाए आपकी खास पहचान

सोने-चांदी की फिटिंग से लेकर हाथी दांत की सजावट तक

20 वीं सदी की शुरुआत में जब यूरोप और अमेरिका में कारें अमीरों का खिलौना मानी जाती थीं, तभी से रईस लोग इन्हें अपनी पसंद और सुविधा के मुताबिक बदलवाने लगे थे। 1920-30 के दशक में रॉल्स-रॉयस, बेंटले और कैडिलैक जैसी कंपनियों के लिए 'कोच बिल्डिंग' का दौर चला, इसमें कार की बॉडी और इंटीरियर ग्राहकों की पसंद से तैयार किए जाते थे। बात भारत की करें, तो यहां पर कस्टमाइजेशन का ट्रेंड शाही रियासतों से शुरू हुआ। अनेक राजा-महाराजाओं ने अपनी कारों को सोने-चांदी की फिटिंग, हाथी दांत की सजावट और यहां तक कि हथियार रखने की जगह तक के साथ बनवाया। किसी ने उसे शानदार बग्घी का स्वरूप दिया, तो किसी ने शाही सवारी जैसा बनवाया। जहां तक दुनिया की बेहतरीन कस्टमाइज्ड कार की बात है, तो सबसे ऊपर रॉल्स-रॉयस स्वेप्टेल का नाम आता है। यह अब तक की सबसे महंगी कस्टमाइज्ड कार गिनी जाती है, जिसे करीब 96 करोड़ रुपये खर्च करके एक अनाम अरबपति ने अपनी लग्जरी यॉट से इंस्पायर्ड डिजाइन कराया था।

कस्टमाइज्ड कार की औसत लागत

- बेसिक मॉडिफिकेशन 2 से 5 लाख रुपये में कराया जा सकता है। इसमें अलॉय व्हील्स, बॉडी किट, सीट कवर, लाइटिंग जैसी चीजें शामिल रहती हैं।
- प्रीमियम कस्टमाइजेशन कराने पर खर्च 10 से 30 लाख रुपये तक हो सकता है। इसमें नया इंटीरियर, कस्टम पेंट, एंटरटेनमेंट सिस्टम, लग्जरी सीटिंग जैसे बदलाव किए जा सकते हैं।
- हाई एंड कस्टमाइजेशन कराने पर खर्च बढ़कर 50 लाख से 5 करोड़ तक पहुंच सकता है। इस तरह के बदलाव में बुलेटप्रूफिंग, एआई-इंटिग्रेटेड डैशबोर्ड, होम-थिएटर जैसी टेक्नोलॉजी, पूरी तरह नया बॉडी डिजाइन जैसी चीजों का चुनाव किया जाता है।

कस्टम कारों के हॉट फीचर्स

- 360 डिग्री रोटेटिंग रिक्लाइनर सीटें
- होम थिएटर तथा गेमिंग सेटअप
- मिनी फ्रिज और काफी मशीन
- स्मार्ट लाइटिंग व एआई असिस्टेंट
- कार्बन-फाइबर बॉडी किट
- इलेक्ट्रिक/हाइब्रिड कन्वर्जन

सबसे महंगी कस्टमाइज कार है पूनावाला के पास

भारत की सबसे महंगी कस्टमाइज कार के मामले में योहान पूनावाला की रोल्स-रॉयस फैंटम VIII EWB (Bohemian Red) को गिना जाता है, जिसकी कीमत 22 करोड़ से ज्यादा है। इसमें सॉलिड गोल्ड स्पिरिट ऑफ एक्स्टसी और इल्युमिनेटेड फ्रंट ग्रिल जैसे विशेष कस्टमाइजेशन किए गए हैं। देश की महंगी कस्टमाइज कारों में नीता अंबानी की रोल्स-रॉयस फैंटम VIII EWB (Rose Quartz) और मुकेश अंबानी की बुलेटप्रूफ रोल्स-रॉयस कलिनन भी शामिल हैं। इनके अलावा फिल्म अभिनेता शाहरुख खान, अमिताभ बच्चन, रणवीर सिंह ने भी अपनी कारों को अपनी पसंद के मुताबिक कस्टमाइज्ड कराने पर बड़ी रकम खर्च की है।

कस्टमाइजेशन के फायदे

- कार कस्टमाइजेशन से आपकी गाड़ी को एक आकर्षक तथा अनोखी पहचान मिलती है।
- यह व्यक्तिगत शैली और पसंद को दर्शाने का एक तरीका भी है।
- कस्टमाइजेशन से कार के प्रदर्शन और खूबसूरती में सुधार किया जा सकता है।
- इससे कार को एक नया लुक और लोग मुड़कर देखने के लिए बाध्य होते हैं।

सितारों के लिए पर्सनालिटी सिग्नेचर जैसी उनकी गाड़ियां

भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी हार्दिक पांड्या ने बीते दिनों अपनी सुपर एसयूवी लैंबोर्गिनी का मेकओवर करके चर्चा पाई थी। उन्होंने गाड़ी के चमकीले पीले रंग को बोल्ड मेटलिक ग्रे रंग में बदलने के साथ व्हील्स में भी मनपंसद बदलाव कराकर स्मार्ट लुक दिया है। पूर्व भारतीय क्रिकेट टीम कप्तान रोहित शर्मा ने अपनी लैंबोर्गिनी उरुस को इंडियन टीम की जर्सी के रंग से मेल खाते ब्लू इलियोस रंग में कस्टमाइज कराया था। इसी तरह बॉलीवुड अभिनेता जैकी श्रॉफ तो अपनी अनूठी पर्सनैलिटी और कार कलेक्शन के लिए जाने जाते हैं। इसी साल की शुरुआत में उन्होंने मेटैलिक ग्रे शेड में कस्टम-बिल्ट टोयटा हिलक्स खरीदी थी। यह एक ऑफ रोडिंग पिकअप ट्रक है। इसमें आफ्टर मार्केट अलॉय व्हील्स और एलईटी लाइट्स लगाई गई हैं। इन कस्टमाइजेशन ने इस पिकअप ट्रक को और स्टाइलिश तथा ऑफ-रोडिंग के लिए सक्षम बना दिया। अभिनेता जॉन अब्राहम भी कस्टमाइजेशन के दीवाने हैं। उनके पास एक कस्टमाइज्ड ऑडी क्यू-7 और मारुति जिप्सी है, जिसे उन्होंने पसंद के अनुसार मॉडिफाई कराया था। अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा ने कस्टमाइज्ड रोल्स-रॉयस खरीदी थी। दीपिका पादुकोण ने भी अपनी पसंदीदा कारों मर्सिडीज-मेबैक जीएलएस 600 और ऑडी क्यू -8 को अपनी पसंद के अनुसार कस्टमाइज करा रखा है।

कारों का हुलिया बदलने का हुनर रखने वाले प्रमुख शिल्पकार

दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कार डिजाइनरों में जियोर्जेटो गिउगिआरो का नाम आता है, जिन्हें 'सदी के कार डिजाइनर' के रूप में चुना गया था। उनके अलावा मार्सेलो गैंडिनी, जिन्होंने लैंबोर्गिनी जैसी सुपरकारों के लिए पहचानी जाने वाली कई प्रतिष्ठित डिजाइन बनाई हैं तथा बतिस्ता फरीना जिन्होंने फेरारी के लिए कई क्लासिक डिजाइन बनाए हैं, के नाम आते हैं। भारत में डीसी डिजायन या दिलीप छाबारिया डिजाइन स्टूडियो को कार कस्टमाइजेशन की कला को नए मुकाम पर पहुंचाने का श्रेय जाता है। उनकी बनाई कारें जैसे कस्टमाइज्ड टोयोटा इनोवा, बुलेटप्रूफ एसयूवी और फिल्मी सितारों के लिए डिजाइन की गई लिमोजीन लोगों के बीच आइकॉनिक बनीं। फिल्म 'टार्जन की द वंडर' कार का डिजाइन उन्होंने ही किया था। उनके बाद आकांक्षा सेठी का नाम लिया जाता है। देश में कई बुटीक ऑटो स्टूडियो भी डिमांड कस्टमाइजेशन के काम को आगे बढ़ा रहे हैं। इनमें दिल्ली में ऑटोसाई, गुरुग्राम में बिग डैडी, मुंबई में रीवैम्प मोटर्स जैसे नाम शामिल हैं।

मॉय फर्स्ट राइड

जुनून हो जब तो मुमकिन है सब

मैं अपने पापा और भाई को गाड़ी चलाते देखती, तो मेरे मन में भी आता कि मैं भी अन्य लोगों की तरह गाड़ी चलाते हुए फर्राटा भरूं। पापा से तो गाड़ी सीखने की बात कहने की यह सोचकर ही डर लगता था, कहीं पापा यह न कह दें कि शादी के बाद वहां जाकर गाड़ी सीखना, खूब चलाना। यहां रहकर गाड़ी चलाने की तो छोड़ो सीखने की बात भी न सोचना। परंतु मेरे मन में तो गाड़ी सीखने का जुनून सवार था। सो मैंने अपने भाई को मनाया कि वह मुझे गाड़ी चलाना सिखाए, पर भाई भी पापा से डरता था। उसने पहले तो मनाकर दिया, लेकिन बहुत समझाने पर इस शर्त पर मान गया कि जब पापा कहीं बाहर गए, होंगे तभी सिखाऊंगा। एक बार पापा कुछ दिनों के लिए कहीं बाहर गए, तब मैंने भाई से गाड़ी सीखने की बात कही। भाई मुझे कार में बैठाकर एक खुले सुनसान मैदान पर ले गया। मुझे बताया कि चाबी लगाकर पहले गाड़ी स्टार्ट करो, फिर क्लच दबाकर गेयर बदलो पहले गेयर पर धीरे-धीरे बढ़ना फिर दूसरा, तीसरा, टॉप गेयर लगाना है। मैंने भाई के बताए अनुसार गाड़ी स्टार्ट कर पहले गेयर में गाड़ी को धीरे से बढ़ाया। फिर अचानक पता नहीं कैसे एक्सीलेटर तेजी से दब गया। एक्सीलेटर दबते ही एकदम से गाड़ी भाग निकली।

हमारे तो हाथ-पैर फूल गए, परंतु मैदान बड़ा होने के चलते गाड़ी बाउंड्री में लड़ती इसके पहले ही भाई ने गाड़ी को स्वयं अपने हाथ में लेकर रोककर मुझे यह कहकर जमकर डांट लगाई कि अगर गाड़ी बाउंड्री में लड़ जाती और तुम्हें चोट लग जाती, तो पापा दोनों लोगों की हालत खराब कर देते। मैं डरी-सहमी भाई की डांट सहती रही। भाई ने कहा अब हम तुम्हें कभी कार चलाना नहीं सिखाएंगे। मुझे तो गाड़ी सीखने का जुनून सवार था। गाड़ी खड़ी कर हम भाई-बहन थोड़ी देर मैदान में घूमें। फिर मैंने हिम्मत करके कहा भाई मुझे एक मौका और दो अबकी पिछली गलती नहीं होगी। भाई ने जमकर डांट लगाते हुए स्पष्ट शब्दों में मनाकर दिया। मैं रुंआसी हो गई। मेरा उतरा चेहरा देखकर भाई ने बड़ी हिम्मत कर मुझे पुनः गाड़ी चलाने को दिया। इस बार मैंने गाड़ी स्टार्ट कर क्लच दबाकर पहला गेयर डाला और धीरे-धीरे कुछ दूर तक गाड़ी को चलाया भी।

कुछ हिम्मत बढ़ी, तो मैंने गाड़ी को धीरे से घुमाया भी। फिर भाई ने मुझे बैक गियर में गाड़ी चलाने को कहा। उसमें भी मैंने धीरे-धीरे चलाया। पहले दिन तो इतना ही हुआ, पर जैसे हिम्मत से गाड़ी चलाई उससे उस दिन मैं बहुत ही खुश थी। दूसरे दिन फिर उसी तरह पहले गेयर में धीरे-धीरे गाड़ी आगे को चलाई और फिर बैक गेयर में धीरे-धीरे पीछे की ओर गाड़ी चलाई। कुछ दिनों तक तो कुछ दूर लगभग आधा, एक किलोमीटर तक ही गाड़ी चलाई। धीरे-धीरे मेरी दूरी बढ़ाती गई। पापा का डर तो हमेशा हम दोनों को लगा रहता था। पापा के न चाहते हुए भी चुपके-चुपके मैं गाड़ी चलाती थी। एक दिन

मैंने सोचा पापा पूरे दिन के लिए बाहर गए हुए हैं, तब तक मैं कुछ देर गाड़ी चलाकर और हाथ साफ कर लूं। अभी मैं गाड़ी लेकर घर से कुछ दूर तक ही गई थी कि सामने से पापा आ गए। शायद घर में कुछ अपना सामान भूल गए थे। उन्होंने मुझे गाड़ी चलाते देखा वह भी अकेले। मेरा तो खून ही सूख गया। पापा ने कहा गाड़ी से उतरो। पापा ने डांट लगाते हुए कहा यह बताओ कि तुमने यह गाड़ी कब और कहां चलानी सीखी? भाई से, कहकर मैंने पापा को सब सच-सच बता दिया। मुझे डर था यह सच मेरे साथ-साथ मेरे भाई के लिए मुसीबत बनकर आने वाला है। पापा ड्राइविंग सीट के बगल वाली सीट पर बैठकर बोले गाड़ी चलाकर घर ले चलो। मैं पापा को बैठाकर डरते हुए, लेकिन बड़े ही सधे हाथों से गाड़ी चलाकर गाड़ी को घर तक लेकर आ गई। घर आते ही पापा ने हमारे साथ-साथ भाई की व मां को वह डांट पिलाई कि सबकी हालत खराब हो गई। थोड़ी देर बाद पापा को गुस्सा जब थोड़ा शांत हुआ, तो मैं पापा के लिए गिलास में पानी लेकर पहुंची। पापा ने गिलास मेरे हाथ से लेकर जमीन पर रख दिया और मुझे गले लगाकर रोने लगे। पापा को रोता देख मेरे भी आंखों से आंसू निकल आए।

पापा ने कहा बेटा कौन बाप ऐसा है, जो अपनी बेटी की उन्नति नहीं देखना चाहता। बेटी एक बाप की भी स्थिति को समझने की कोशिश करो। मुझे हमेशा डर लगा रहता था कि गाड़ी सीखते वक्त हमारी बेटी को कहीं चोट लग गई और वह चोट हमारी बेटी की शादी में रोड़ा बन गई, तो हम तो जीते जी मर जाएंगे। बस यही डर मुझे तुम्हें गाड़ी सीखने से रोकता था। आज मेरी बेटी गाड़ी चलाकर जब मुझे घर लेकर आई, तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। तुम सबको तो मैं नकली डांट पिला रहा था। वह दिन मेरी जिंदगी का सबसे सुखद दिन था, जब पापा ने डांट पिलाने के बाद प्रसन्नता में रोए और मुझे भी रुलाया। इस तरह मैं अपने जुनून से अपने पापा की नालायक बिटिया से उसकी दुलारी बिटिया बन गई।

-वंदना सिंह, कानपुर

अब बिना टेंशन पूरा होगा FASTag KYV: जानें नई आसान प्रक्रिया

भारत में हाइवे पर FASTag अब हर वाहन के लिए अनिवार्य है, लेकिन पिछले वर्ष लागू हुई KYV (Know Your Vehicle) प्रक्रिया कई लोगों के लिए झंझट भरी साबित हो रही थी। अलग-अलग एंगल से वाहन की तस्वीरें अपलोड करना, RC डिटेल्स भरना और वेबसाइट पर नेविगेशन इन सबमें यूजर्स को काफी परेशानी हो रही थी। इसी समस्या को देखते हुए NHAI ने इस प्रक्रिया को सरल बनाने का फैसला लिया है, ताकि लोग बिना दिक्कत FASTag से जुड़ी औपचारिकताएं पूरी कर सकें। *-फीचर डेस्क*

क्या है KYV

KYV यानी Know Your Vehicle एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें FASTag उपयोगकर्ताओं को गाड़ी की RC और वाहन की तस्वीर अपलोड करनी होती है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि FASTag उसी वाहन पर लगा है, जिसे इस्तेमाल किया जा रहा है। यह सिस्टम misuse रोकने के लिए बनाया गया है, जैसे ट्रक चालक कार वाला FASTag लगाकर कम टोल भरने की कोशिश न कर सकें। इसके अलावा, यह वेरिफिकेशन हर तीन साल बाद दोबारा करना अनिवार्य होगा।

नए नियमों में बदलाव

अब तुरंत बंद नहीं होगा FASTag

यह बदलाव वाहन मालिकों के लिए सबसे बड़ा राहत बिंदु है। अब KYV अधूरा रहने पर FASTag को तुरंत निलंबित नहीं किया जाएगा। बैंक यूजर्स को समय-समय पर SMS भेजकर जानकारी देंगे और जरूरत पड़ने पर कॉल के माध्यम से सहायता भी करेंगे।

ऐसे दर्ज करें शिकायत

यदि प्रक्रिया के दौरान किसी यूजर को दिक्कत आती है, तो वह 1033 हेल्पलाइन पर कॉल करके शिकायत दर्ज कर सकता है। NHAI यह बदलाव इसलिए कर रहा है, क्योंकि भविष्य में MLFF (MultiLane Free Flow) टोल सिस्टम लागू किया जाना है, जिसमें बिना टोल बूथ के हाईवे पर 100 प्रतिशत सटीक टैगिंग जरूरी होगी।

अब केवल फ्रंट फोटो पर्याप्त

यूजर्स को अब गाड़ी की साइड फोटो अपलोड करने की आवश्यकता नहीं है। सिर्फ फ्रंट तस्वीर ही अपलोड करनी होगी, जिसमें नंबर प्लेट और FASTag स्पष्ट दिखाई दें।

RC अपलोड की झंझट खत्म

NHAI सिस्टम अब सीधे VAHAN डेटाबेस से वाहन की जानकारी स्वत: प्राप्त कर लेगा। यूजर को सिर्फ Vehicle Number / Chassis Number या मोबाइल नंबर दर्ज करना होगा। यदि एक ही मोबाइल नंबर पर कई वाहन रजिस्टर्ड हैं, तो यूजर अपनी गाड़ी को सूची में से चुन सकता है।